

| JANUAR | | | | | | FEBRUAR | | | | | MÄRZ | | | | | |
|--------|----|---|----|----|----|---------|---|----|----|----|------|---|----|----|----|----|
| KW | 52 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| Mo | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| Di | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| Mi | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| Do | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| Fr | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| Sa | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| So | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 5 | 12 | 19 | 26 | |

| APRIL | | | | | | MAI | | | | | JUNI | | | | |
|-------|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|------|----|----|----|----|
| KW | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| Mo | | 3 | 10 | 17 | 24 | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 |
| Di | | 4 | 11 | 18 | 25 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| Mi | | 5 | 12 | 19 | 26 | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| Do | | 6 | 13 | 20 | 27 | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| Fr | | 7 | 14 | 21 | 28 | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| Sa | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | |
| So | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | |

Du bist der Gott, der mich sieht!

1. Mose 16,13

2023

| JULI | | | | | | AUGUST | | | | | SEPTEMBER | | | | | |
|------|----|----|----|----|----|--------|----|----|----|----|-----------|----|----|----|----|----|
| KW | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 |
| Mo | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 |
| Di | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 |
| Mi | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| Do | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| Fr | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| Sa | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| So | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | |

| OKTOBER | | | | | | NOVEMBER | | | | | DEZEMBER | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----------|----|----|----|----|----------|----|----|----|----|----|
| KW | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 |
| Mo | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 4 | 11 | 18 | 25 |
| Di | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 5 | 12 | 19 | 26 |
| Mi | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| Do | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| Fr | | 6 | 13 | 20 | 27 | | 3 | 10 | 17 | 24 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| Sa | | 7 | 14 | 21 | 28 | | 4 | 11 | 18 | 25 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| So | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | | 5 | 12 | 19 | 26 | | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |

Bundesweit gesetzliche Feiertage: 1.1. Neujahr • 7.4. Karfreitag • 10.4. Ostermontag • 1.5. Tag der Arbeit • 18.5. Christi Himmelfahrt • 29.5. Pfingstmontag • 3.10. Tag der Deutschen Einheit • 25.12. 1. Weihnachtstag • 26.12. 2. Weihnachtstag

Die Kernpunkte des Evangeliums

1 Gott liebt jeden Menschen!

„Denn so sehr hat Gott die Welt geliebt, dass er seinen eingeborenen Sohn gab, damit jeder, der an ihn glaubt, nicht verlorengelht, sondern ewiges Leben hat.“ – Johannes 3,16

2 Jeder Mensch ist aufgrund seiner Sünde von Gott getrennt!

„... sondern eure Verschuldungen scheiden euch von eurem Gott, und eure Sünden verbergen sein Angesicht vor euch, dass ihr nicht gehört werdet.“ – Jesaja 59,2

3 Niemand kann aufgrund seiner guten Werke in den Himmel kommen!

„Denn aus Gnade seid ihr errettet durch den Glauben, und das nicht aus euch – Gottes Gabe ist es; nicht aus Werken, damit niemand sich rühme.“ – Epheser 2,8–9

4 Jesus Christus starb am Kreuz auf Golgatha stellvertretend für unsere Sünde!

„Gott aber erweist seine Liebe zu uns darin, dass Christus für uns gestorben ist, als wir noch Sünder waren.“ – Römer 5,8

5 Wer umkehrt, seine Sünden bekennt und Jesus aufnimmt, wird gerettet und empfängt ein neues Leben von Gott!

„So viele ihn [Jesus] aber aufnahmen, denen gab er das Recht, Kinder Gottes zu werden, denen, die an seinen Namen glauben.“ – Johannes 1,12



Gebet | Evangelisation | Mission | Seminare | Medien

Am Hofe 2, 29342 Wienhausen, Deutschland

Telefon: 05149 9891-0, Fax: -19

E-Mail: info@bruderhand.de

bruderhand.de | komm-zu-jesus.de